कबूतरा जनजाति की संघर्ष गाथा

डॉ अनुज कुमार शुक्ल

सहायक आचार्य हिंदी विभाग कुटीर पी. जी . कॉलेज चक्के जौनपुर

Author Email: anujkshukla970@gmail.com

मैत्रेयी पुष्पा के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' की कथावस्तु बुन्देलखण्ड की विलुप्त होती जनजाति पर आधारित है । इस उपन्यास में कबूतरा जनजाति में जन्मी 'अल्मा' की संघर्ष कथा है । कबूतरा जनजाति किस तरह जीने के लिए संघर्ष कर रही है, मसलन रोटी, कपड़ा, मकान की उपलब्धता ही उनके जीवन का लक्ष्य है । उसी रोटी-कपड़ा के जुगाड़ में कितनी जिन्दगियाँ असमय काल कवलित हो गई और किस तरह आदिवासियों के जीवन का अंत हो रहा है, इस तड़प और बैचेनी को प्रस्तुत किया गया है । मैत्रेयी पुष्पा के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपनी कथा वस्तु का चुनाव लोक से ही करती हैं । वंचित समूह की आवाज साहित्य की आवाज बने, यह उनका प्रयास रहता है । इन वंचित समूहों में आदिवासी स्त्री की समस्या को उन्होंने पुरजोर तरीके से उठाया है । ''औरत कितनों के पास होती है ? जंगलिया तकदीर का सिकंदर, कितना अभागा है!''1

इस तरह से मैत्रेयी जी ने महिलाओं के शोषण को सामने लाने का प्रयास किया है। कबूतरा जनजाति के साथ हो रहे अन्याय का बड़ा कारण उनको पहले से अपराधी जनजाति अधिनियम के तहत अपराधी मानना था । अपराधी मानने के कारण समाज व पुलिस उसके साथ बर्बर व्यवहार करती थी। यही वह जरिया था जो तमाम पूर्वाग्रहों को जन्म दे रहा था । इन सबके बावजूद कबूतरा जनजाति के लोगों ने संघर्ष करना नहीं छोड़ा । कबूतरा पुरूष दिन में जंगल में जाकर छुप जाते और रात में कभी-कभार आकर मिलते थे । स्त्रियां शराब बनाती उसका व्यापार करती। इस काम में राजनीतिक दल की बहुत अधिक भूमिका रहती है और शराब के बहाने आदिवासी समाज की स्त्रियों का भी शोषण होता है । ''अल्मा सूरजभान जैसे डाकू राजनेता के चंगुल में फँस जाती है । सूरजभान सर्किट हाउस में मंत्रियों और साहब लोगों को लड़कियाँ पेश करता था । इसी रास्ते चलकर वह राजनीति के शिखर तक आया था।''2

किस तरह से इस समाज को राजनीतिक दलों के द्वारा नोंचा जा रहा है । इसे उपन्यास में बखूबी से दिखाया गया है । इस तरह कबूतरा पुरूष तो घृणा के काम आते और स्त्रियां प्रेम और देह के काम में ली जाती। स्त्रियों को मालूम होता कि उनका शोषण हो रहा है, लेकिन वह मजबूरी में विरोध नहीं कर पाती हैं । अल्मा कबूतरी एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें कबूतरा जनजाति के जीवन का कटु सत्य का मार्मिक उद्घाटन किया गया है । ऐसा नहीं है कि ये लोग सभ्य समाज की तरह नहीं रहना चाहते लेकिन जब रहने के लिए जमीन, छत, रोटी, कपड़ा ही नहीं है तो क्या करें ? जिस जमीन पर आकर बसें हैं, उस पर भी मुश्किल हो रही है । ''आखिर क्यों सभ्य समाज की गलत सोच और अभद्र लोकतांत्रिक प्रक्रिया उनकी अस्मिता एवं अस्तित्व के साथ खिलवाड़ कर रही है?'' 3

इस प्रकार यह समाज ने हर तरह से मुश्किल का सामना कर रहा है । इस उपन्यास में 'मंसाराम' नामक पात्र है, जो कि गैर आदिवासी कज्जा मंसाराम के गाँव आकर बस गया है । मंसाराम को बार-बार यह लगता है कि उसका दो बीघा खेत नष्ट हो चुका है। इसको किसी तरह वापस लेना है । इसके लिए वे बराबर गुणा-गणित बैठाते । जब मंसाराम बड़े हुए तो उनके सामने नई चुनौती आई। ग्राम प्रधान पद के चुनाव में अभी तक गुन्नू सिंह निर्विरोध चुने जाते रहे । लेकिन अब लल्लू राजा नामक व्यक्ति ने उसके लिए परेशानी खड़ी कर दी। ऐसी परिस्थितियों में उन्हें कबूतरा फिर से याद आ गए। उन्हें लगा कि वे कबूतरा जनजाति के वोट पा लें तो जीत जाएगें लेकिन ऐसा नहीं हो पाता है । वे कुछ दिनों के लिए कबूतरा को प्रताड़ित करना बन्द कर देते हैं । जंगलिया कबूतरा को लल्लू राजा के घर मूर्ति चोरी के लिए भेज देते हैं । जिससे लल्लू की बदनामी हो जाए जबकि लल्लू ने जानबूझकर अपने चाचा के खिलाफ रिपोर्ट लिखवा दी तथा बाद में उनकी हत्या कर दी जाती है । लल्लू उनकी जमीन जायजाद हड़प लेता है । यहाँ लेखिका ने व्यक्ति के अंदर के लालच को उजागर किया है । इसके लिए लल्लू व मंसाराम दोनों जान लेने से नहीं चूकते । बाद में मंसाराम लल्लू राजा से मिल जाते हैं और मंसाराम दारू पीने कबूतरा के मोहल्ले में जाते थे । वहीं से उन्होंने कदमबाई की वियोग की बात सुनी, उन्हें पता चला कि जंगलियां बाहर जंगल चला गया है । इसके कारण उनकी नवविवाहिता पत्नी वियोग में तड़पती है । इसी का फायदा उठाकर वे कदमबाई के साथ संसर्ग करते हैं और उसी रात जंगलियां की हत्या कर दी जाती है । कदमबाई हत्या की साजिश जान तो जाती है लेकिन वह कुछ कर नहीं सकती, क्योंकि वह किससे कहे? कहीं न कहीं वह स्वयं को भी दोषी पाती है । उस रात की सजा उसे जीवन भर मिलती है । उसके पेट में मंसाराम का बच्चा पलता है, वह जानती है लेकिन उसने निर्णय लिया कि वह बच्चा पैदा करेगी और उसे जंगलियां जैसा बनाएगी । कबूतरा जनजाति के लोगों पर पुलिसिया अत्याचार एक कुप्रथा जैसी बन जाती है । आदिवासी समाज पर पुलिस हमेशा ही अत्याचार करती है और अभी भी कर रही है । अक्सर पुलिस कबूतरा को पकड़ ले जाती है। जी भर कर मारती है । कबूतरा जनजाति में किसी की हत्या पर उनके परिवार वाले पहचानने से इंकार कर देते हैं क्योंकि यह और भी बड़ी आफत होती है। इसलिए कदमबाई भी जंगलियां की लाश पहचानने से इंकार कर देती है । मलिया कराहकर बोलता है - ''देह यहाँ आती तो धान फूल डालकर नया कपड़ा उढ़ा देते । अरथी उठती तो अपने कका की भइया की देह को बाल-बच्चे हाथ लगा देते । ..... पर हमारे भाग में लिखी है लावारिस मौत ।''4

यह कथन कबूतराओं की नियति को दिखाता है । वे ऐसी जिंदगी जीने को अभिशप्त हैं । मैत्रेयी पुष्पा ने इस उपन्यास में पुलिस के अत्याचार से पीड़ित कबूतरा जनजाति की पीड़ा का हृद्यस्पर्श वर्णन किया है। यह वर्णन इतना प्रभावी है कि उसका बिम्ब बनने लगता है । कबूतरा की बस्ती में पुलिस जाकर मलिया को पकड़ लाती है । मलिया बार-बार पकड़ा जाता है । पुलिस बस्ती में मलिया जैसों को चिन्हित कर लेती है उन्हें ही पकड़ती व पीटती है । मलिया भी अपनी नियति जानता है वह कहता है - ''मैं रोटी का टुकड़ा हूँ कदम, पुलिस के आगे फेंकने के लिए। पुलिस आए और खाली चली जाए, यह दरोगा-सिपाहियों की तौहीन है । वे गुर्राने लगते हैं फिर ! मरे हुओं को ही फिर से मारने लगते हैं । कहो, आपस में ही एक-दूसरे का सिर फोड़ने लगें। लाचार आदमी ... मुजरिम लेकर थाने की चैखट पर न चढ़ पाए तो बूटवर्दी का पराक्रम क्या?'' 5

इस तरह से पुलिस अपने को सही दिखाने के लिए मलिया को शिकार बनाती है, मलिया यह जानता है कि पुलिस पकड़ने पर मुझे नहीं छोड़ेगी इसलिए मलिया पुलिस को गाली देकर भागता है, कबूतरी कहती है कि पुलिस को जितनी गाली दोगे उतना ही मुकदमा दर्ज कर लेते हैं, दरोगा बोलता है कि मलिया को गोली मार दो उसमें से एक नया सिपाही बोलता है कि गोली बेकार जायेगी इसलिए वह दौड़कर पकड़ लेता है और मलिया को बंदूक के बट से मार-मारकर घायल अधमरा कर दिया जाता । गांव में कोई मर्द रह गया था । कबूतरा गाँव की गरीबी का चित्रण ऐसा कि शरीर ढ़कने के लिए चिथड़े भी बिनना पड़ता है । गरीबी का ऐसा आलम की लड़कियों व महिलाओं के अंगों को ढ़कने के लिए भी जरूरी वस्त्र नहीं है । बच्चों के मन में बहुत दुःखद पश्चाताप भर जाता है । "बच्चे गाँव से दूर पड़े घूरों को कुरेद आए। कुछ चिथड़े उखाड़ लाए। उन्होंने वे चिथड़े डेरों के भीतर ..... माँ-काकियों के नंगे बदन रह-रहकर आँखों में छा जाते ।"6

ऐसी परिस्थितियों में जब बस्ती में कोई लड़का पैदा होता तो बस्ती वाले खुश होते क्योंकि पुरूष की देह तो नंगी नहीं मानी जाती । इसलिए जब राणा का जन्म हुआ तो कदमबाई खुश हुई । हालत यहां तक खराब थी कि भजनी जैसी औरत को नंगे रहने की आदत पड़ गई थी । इस उपन्यास में आदिवासी समाज की गरीबी को यहां पर दिखाया गया है; जिसमें सबसे ज्यादा उम्र की औरत ने अपने समाज को बचाने के लिए खुद नंगा रहना पसन्द किया और छोटी-बड़ी महिलाओं को बचाने का प्रयास किया। कदमबाई राणा को जंगलिया जैसा बनाना चाहती है। लेकिन वह ऐसा भी नहीं चाहती कि जो राणा खुद नहीं करना चाहता, वह उसे भी कराना चाहती है। वह राणा के प्रश्नों से घायल हो जाती है। वह राणा से कह नहीं पाती कि तुझे चोरी वगैरह इसलिए करना पडेगा क्योंकि मुखिया व बस्ती के लोग चाहते हैं, उनके अनुसार चलते रहेगें तो माफी मिलती रहेगी। राणा मंसाराम के लड़के की संगत कर लेता है, वह भी पढ़ाई करना चाहता है लेकिन कदम कहती है कि पढ़ाई-लिखाई करना कज्जा लोगों का काम है । हमारे भाग्य में ये सब नहीं है। सरमन मुखिया ने बताया कि दरोगा जी ने पाँच हजार हफ्ता मांगा है। हफ्ता दो, दारू बेचते रहो हमें कोई दिक्कत नहीं है । "पाँच हजार का हफ्ता लगेगा, मौज से दारू बेचो। दस हजार दो, चोरी और लूटपाट करो। बीस हजार पर डकैती का सुभीता देती है पुलिस । मिलीभगत के कितने ही संयोग हैं ।"7

पुलिस की कार्यप्रणाली का यही सच है । पुलिस कहती है कि पैसा ऊपर पहुँचाना है, ऊपर वाले बोलते है कि नेता मंत्री को देना है |इस तरह से अपना रौब इन आदिवासी लोगों पर दिखाते हैं और गाँव के मुखिया को मिलाकर काम करवाते हैं, लेकिन लेखिका ने यह दिखाया है कि कबूतरा के लिए यह नया था, इसलिए वे सब आश्चर्यचकित थे और उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था । हालांकि इससे कदमबाई की मुश्किलें बढ़ गयी थी। क्योंकि कदमबाई के हिस्से में 500 रूपये आया था जो दारू बेचने के लिए देना था। कदमबाई को सरमन काका का आदेश मिला कि राणा दिवाली से पहले चोरी के लिए जाएगा । अब राणा के चोरी पर जाने की तैयारी हुई । किसी तरह उसे भेजा गया लेकिन उसका मन तो पहले से ही नहीं था, वह डर रहा था। कहीं कोई पकड़ लेगा तो क्या होगा ? उसे घर में चोरी न करने का सुझाव दिया उसके बदले खलिहान में सोए बूढ़े व युवक को मार डाला गया । यह देखकर राणा बेहोश हो गया । उसे लाकर सब डेरे पर छोड़कर जंगल भाग गए। सरमन मुखिया ने इसे भी माफ किया, कदमबाई एहसान से झुक गई ।

इसके बाद एक कोशिश और की गई, वह भी निष्फल हो गई। इससे कदमबाई को बेइज्जती महसूस हुई । इस तरह से आदिवासी समाज में शिक्षा के अभाव के कारण अपने ही बच्चों को गलत रास्ते पर चलने को मजबूर करते हैं । कदमबाई राणा को समझाते हुए कहती है कि तू 'राणा' सरमन और मुखिया की बात को क्यों नहीं समझता, इस पर राणा बोलता है कि मुखिया और सरमन मुझे चोरी के लिए कहते हैं ,अम्मा मैं नहीं जाना चाहता हूं |मैं पढूंगा और मुझे सिपाही बनना है । इतने में कदमबाई ने गुस्से में आकर राणा को पीटने लगती है और समझाती है कि मुखिया की बात मान लो पर वह नहीं मानता है । राणा यह समझ जाता है कि माँ मुखिया के दबाव में आकर मुझे भेजना चाहती है और माँ की मजबूरी को स्वीकार कर लेता है । राणा के ताऊ, दूलन और राणा तीनों निकल लेते हैं और राणा दारू के नशे में कुछ समझ नहीं पाता है । कदम और सब मिलकर राणा को निकम्मा कहते हैं । इस तरह से राणा को उकसाया जाता और वह काकी को बताता है । इस तरह से कहा जा सकता है कि आदिवसी समाज को किसी न किसी मजबूरी में ये कार्य करना पड़ता है । यह समाज बहुत ही सरल और स्वाभिमानी होता है । केदार प्रसाद मीणा ने कहा है कि ''आदिवासी बहुत ही शांतिप्रिय, सहज और सरल प्रकृति के स्वाभिमानी लोग होते हैं । वे कभी किसी को ठगते नहीं-न ठगना चाहते हैं, न खुद ठगाना चाहते हैं ।'' 8 इसी सरलता एवं सहजता के कारण वे स्वयं ठगाते रहते हैं | कबूतरा जनजाति की अनेक शोषण की गाथायें इस उपन्यास में उकेरी गई हैं | शोषण के लिए उनके शरीर पर कबूतरा लिखवा दिया जाता था | उनको बेचा जाता था | अनेक प्रकार के शोषण सहने के लिए विवस किया जाता था |

सन्दर्भ सूची

1. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली, 2016, पृ० 21
2. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016, पृ० 345
3. रसाल सिंह, बन्ना राम मीणा, आदिवासी अस्मिता वाया कथा-साहित्य, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स 1/4प्रा० 1/2 लि०, नई दिल्ली, 2014 , पृ० 150
4. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली, 2016, पृ० 25
5. वही पृ० 46
6. वही पृ० 47
7. वही पृ० 55
8. केदर प्रसाद मीणा, आदिवासी विद्रोह, अनुज्ञा बुक्स वेस्ट गोरख पार्क शाहदरा, दिल्ली, 2017, पृ० 13